होमा जैविक कृषि क्यों ?

श्री वसंत परांजपे

होमा उपचार एक सम्पूर्ण प्रदर्शित विज्ञान है। यह एक प्राचीन अविष्कार है। समय के साथ यह ज्ञान विलुप्त हो गया था परन्तु अब लोगों को यह सलाह दी जा रही है कि प्रदूषित पृथ्वी को कैसे प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है। होमा उपचार एक वैदिक ज्ञान है। जो प्राचीन काल से मानव जाति को विदित है। जब प्रदूषण से अप्रिय घटनायें घटित होती हैं तब प्रकृति के मूलतत्वों में बदलाव आता है।

अणुओं की सम्वंधता एवं विलयता की शुरूआत होती है जैसे कि अथर्ववेद मे उद्धृत किया गया है कि जब अणुओं की पुनःविलयता एवं विखण्डता अनुपयुक्त अवस्था में होती है। तब सभ्यता का विनाश संभव है। इस अवस्था में जब अग्निहोत्र किया जाता है। तब उपरोक्त क्रियायें शांतिमय ढंग में घटित होती हैं जिसके फलस्वरूप लाभदायक अवयवों का उत्पादन होता है। ध्यान दिया जाय कि हम यह नही कह रहे हैं कि किसी वस्तु की संरचना नही होती है बल्कि आकृति में परिवर्तन होता है। यही होमा उपचार का ज्ञान है। इस ज्ञान का प्रयोग बिना किसी रसायन से फसलों के उत्पादन में प्रयोग किया जा सकता है। अग्निहोत्र पात्र में अग्नि प्रज्वलित करना ही मौलिक होम है। जीवन कायम रखने के लिए अग्निहोत्र आवश्यक है।

जब सारी आशायें खत्म हो जाती हैं तब होमा उपचार का प्रयोग होता है। कोई भी मनुष्य इसको करके अपने जीवन की परिचर्या बना सकता है। अग्निहोत्र का पौधों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव मनुष्यो एवं जानवरों पर भी पड़ता है परन्तु पौधों पर प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है क्योंकि पौधे एक साधारण जीव हैं।

वैज्ञानिक संसार पर विश्वास रखते हैं। हम फसलोत्पादन की सलाह दे सकते हैं कि कैसे कम से कम प्रक्षेत्र से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। कैसे भूमि को उर्वर, पर्यावरण का पोषण एवं जल को शुद्ध रख सकते हैं। यह सभी अग्निहोत्र के भाग हैं। कैसे बीजोपचार करके बुआई कि जाय, कैसे पौधों का पोषण किया जाय एवं कब और कैसे पैदावार ली जाय कि यह सब वेदों में उद्धृत है और यह ज्ञान का भंडार वैज्ञानिकों का इन्तजार कर रहा है। यह सभी हम प्राकृतिक संशाधनों से प्राप्त कर सकते हैं।

यदि हम सोचते हैं कि हमने यह आधुनिक तकनीकी ज्ञान स्वर्ग से प्राप्त किया है तो यह अगले वर्षो में हमारे लिये नक्र बन सकता है। हम इसको पसंद करें या न करें परन्तु हमने अपने आप को चाँदी की कठौती की तकनीकि के मृत्यु के जबड़ो में डाल दिया है।

विज्ञान एवं तकनीकि भिन्न–भिन्न हैं। विज्ञान सत्य की खोज है। तकनीकि द्वारा वायु एवं मृदा का प्रदूषण हुआ है। हम कीटनाशको से पौधो के जीवन को नष्ट कर, रासायनिक उवर्रको एवं खाद्य यौगिकों से मानव को प्रदूषित कर रहे हैं। यह सभी अब बदला ले रहें है। इस युग में यदि बड़े पैमाने पर इनका प्रातिरोध नही किया गया तो हमारा जीवन संभव नही है।

हम सब उस स्तर तक पहुँच चुके हैं जहॉ पर कोई भी प्राकृतिक संसाधन प्रदूषण मुक्त नही रह गया है। हमारी सारी पानी की आपूर्ति प्रदूषित हो जायेगी। उसी क्षेत्र में भीषण अकाल एवं बाढ की समस्या में वृद्धि होगी। हमें यह समझना चाहिए कि इसकी शुरूआत हो चुकी है। अब हमें विज्ञान पर भरोशा करके पर्यावरण, जल, मृदा एवं सभी प्रकार के जीवन से संबन्द्धित प्रदूषण को खत्म करना होगा। वैज्ञानिक एवं

सरकारें यह जानती हैं कि मनुष्य की जागरूकता काल्पनिक उन्नति के अंधकार एवं पर्यावरण प्रदूषण के अज्ञान से प्रभावित है। इस आत्मसंतोष का अंत हिंसक अवस्था में होगा। अतः अब यहॉ से होमा उपचार की अवश्यकता है। हम वैज्ञानिकों से प्रार्थना करते हैं कि होमा उपचार के प्रभाव पर शोध करें कि कैसे इससे प्रदूषण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रकृति में सभी जीवित वस्तुयें जैसे पौधे, वृक्ष, जंगल, जानवर एवं मानव भंयकर प्रदूषण से पीड़ित हैं जिसके फलस्वरूप प्रदूषण के भयानक परिणाम से बचना मुस्किल हो जाता है। मृदा में लाभदायक जीवों की संख्या में कमी हो गयी है। अग्निहोत्र वातावरण के बिना खाने के लिए भोजन की उपलब्धता असंभव है।

अग्निहोत्र जो होमा का मूल है, संसार को बचाने का एक ही विकल्प है। यदि कोई भी मनुष्य इससे अच्छा, सस्ता एवं आसान तरीका प्रयोग करके दिखा सके तो हम सुनने के लिए तैयार हैं।

जब परमाणु प्रतिकर्मी से रिसाव एवं कचरा निकलता है तो उस क्षेत्र के लोग जैसे डायनामाइट के ढेर पर बैठे हुए लगते हैं। लोग वैज्ञानिकों पर क्रोधित होते हैं कि उनके लिए बिना सही जानकारी के यह क्या कर दिया जब वे रेडियो धर्मी वस्तुओं पर प्रयोग करते हैं परन्तु वे यह नही सोचते हैं कि यह शक्ति का कितना गलत परीक्षण है तथा इससे भयावह दुर्घटना हो सकती है। इसके निराकरण हेतु शोध कार्य सही ढंग से नही किया जाता हैं वैज्ञानिक बहुत लापरवाही से कार्य करते हैं। इसका निराकरण अग्निहोत्र है जिसको हमारे द्वारा प्रदान करना चाहिए। हम पर विश्वास न करें, अग्निहोत्र करें एवं स्वयं सन्तुष्ट हों। हम वैज्ञानिकों को अन्वेषण हेतु स्वागत करते हैं।

रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की मात्रा में प्रतिवर्ष वृद्विहो रही है। एक अवस्था ऐसी आती है कि बिना इनके प्रयोग के कुछ पैदा ही नही होता है। यदि आप इनका प्रयोग करते हैं तो उससे भूमि, जल एवं मृदा का नाश होता है। जब हम इस प्रकार से उत्पादित भोजन का सेवन करते हैं तो ये खतरनाक रसायन हमारे शरीर में पहुॅचते हैं। कुछ वर्षो के पश्चात् जो भूमि उर्वर थी एवं प्रचुर मात्रा में उत्पादन करती थी बेकार हो जाती है। कुछ लोगों के जैविक उत्पादन एवं जैविक कीट नियन्त्रण अपनाने का यही कारण है परन्तु कुछ वर्षो तक जैविक उत्पादन होता रहता है परन्तु इसके बाद वातावरण के प्रदूषण में वृद्विसे जैविक कृषकों की परेशानियॅा बढ़ जाती हैं।

रसायनों की मात्रा में वृद्विसे भूमि की उपरी सतह पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है जिससे किसी भी फसल का उत्पादन नही हो सकता है। इस समस्या का केवल एक ही उत्तर है होमा जैविक कृषि। प्रदूषण से मूलतत्वों में परिवर्तन होता हैं। जहॅा पर अग्निहोत्र किया जाता है चुम्बकीय आक्रषण से कुछ लाभदायक तत्व पृथ्वी पर एकत्रित होते हैं। कुछ तत्व दूसरे ग्रहों से भी आ सकते हैं।

प्रदूषण से भूमि की रचना में परिवर्तन होता है जिसके फलस्वरूप परिणाम विनाश कारक हो सकते हैं। भूमि पौधों एवं जीवों का पोषण नही कर पाती है। इसका एक सही उपाय है कि बड़े पैमाने पर अग्निहोत्र करके भूमि एवं वातावरण को पोषित एवं स्वस्थ बनाया जाय। कई स्थानों पर मृदा प्रदूषण के कारण पौधो का पोषण नही कर पाती है। जिससे पौधें बीमारियों एवं कीटो से ग्रसित रहते हैं। अग्निहोत्र से पौधे स्वस्थ एवं फलते फूलते हैं। क्योंकि होमा से उनका पोषण होता है।

विलय एवं विखण्डन में आणविक परिवर्तन होता है जिससे तत्वों के परमाणविक संरचना एवं भार में परिवर्तन होता है। इलेक्ट्रान एवं न्यूट्रान विभिन्न वेग से परिक्रमा करते हैं। यदि उपयुक्त क्रियाओं को अर्न्तदृष्टि से देखा जाय तो हम वैज्ञानिको को अग्निहोत्र के इस ज्ञान को कुछ क्षेत्रों में दिखा सकते हैं।

भूमि में पोषक तत्वों की मात्रा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिससे आहार आपूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। प्रदूषण एक बीमारी है एवं अग्निहोत्र उसका उपचार है। अग्निहोत्र प्रदूषित वातावरण से खत्म हुये पोषक तत्वों को वापस लाने में सक्षम है। जीवाणुओं के रासायनिक एवं आणविक संरचनाओं में परिवर्तन होता है जिससे वे रासायनिक एवं जैविक क्रियाओं प्रति उन्मुक्त हो जाते हैं। यदि हम अग्निहोत्र करते हैं तो आसपास की सभी वस्तुओ में सुधार होता है।

पौध संरचना एवं दैहिकी

होमा वातावरण में पौधों में पत्तियों की शिरायें सामान्य अवस्था की तुलना में बडी एवं बेलनाकार होती हैं। जिससे पूरें पौधे में पोषण तत्वों का प्रवाह अधिक होता है। फलस्वरूप पौधे की वृद्वि एवं उत्पादन चक्र में वृद्विहोती है। इसके अतिरिक्त पौधे के हरेपन में वृद्विएवं वातावरण में कार्बन डाईआक्साइड का आक्सीजन में परिवर्तन चक्र सुचारू रूप से चलता है। यदि पौधों की कोशिकाओं की स्लाइड बनाया जाय तो अन्य पौधें की अपेक्षा होमा वातावरण में उत्पन्न पौधें की कोशिकाओं की संरचना में अन्तर होता है। अदृश्य उर्जा का पौधों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि वैज्ञानिक चाहें तो इसका परीक्षण आसानी से कर सकते हैं।

पौधों के आणविक संरचना में प्रदूषण के कारण परिवर्तन से मानव जाति को इनसे पोषण ग्रहण करना मुस्किल हो जाता है अन्यथा ये पौधे होमा वातावरण एवं अग्निहोत्र की भस्म के प्रयोग से उगाये गये हों। पौधे इस वातावरण में परिवर्तित होकर प्रकृति में अपने आप को अपनी जगह व्यवस्थित कर लेते हैं। पौधों के रोग निदान एवं उनके पोषण संरचना में बदलाव आता है। अग्निहोत्र से पोषण तत्वों, स्वाद एवं उपरोक्त सभी लाभदायक तत्वों की मात्रा में वृद्विहोती है जिससे संतुष्टि (गुणवन्ता एवं मात्रा) एवं स्वास्थ्य में वृद्विहोती है। उप्पाद का रंग, आकार एवं संरचना में अतिविशिष्ट परिवर्तन होता है।

होमा से पौधों के जड़ तन्त्र में परिवर्तन होता है। जड़ें पर्याप्त मात्रा में भूमि से पोषक तत्वों का उद्ग्रहण करती हैं एवं जड़ तंत्र छोटा एवं प्रभावशाली होता है।

होमा वातावरण में सोयाबीन की खेती करने पर एक नई प्रक्रिया देखी गयी। इससे सोयाबीन कृषकों एवं मालियों को लाभ होगा कि वे सोयाबीन के लिए अलग क्षेत्र निर्धारित कर लें। होमा वातावरण में सोयाबीन के खेत में रोग निदान से सम्बन्धित एक अद्भुत अवस्था देखने को मिली। होमा वातावरण में उत्पादित सोयाबीन से शरीर में प्रतिरक्षी कोशिकाओं का विकास होता है जिससे अधिकतर बीमारियों का निदान होता है। जिसको चिकित्सा से सम्बन्धित लोग आसानी से समझ सकते हैं। यह केवल होमा वातावररण में ही सम्भव है।

पौधों की कार्य प्रणाली

जब अग्निहोत्र किसी बाग या वृक्ष के नीचे किया जाता है तब धुँआ पत्तियों तक पहुँचता है जिससे उनके हरेपन में वृद्विहोती है। यह रासायनिक क्रिया के पश्चात् होता है। इस विषय पर वनस्पतिशास्त्र विद् आसानी से अध्ययन कर सकते हैं।

होमा वातावरण में, मुख्यतया अग्निहोत्र पौधे की इस प्रक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य करता है। जिससे पौधा अपनी पोषण आवश्यकता की प्रतिपूर्ति करता है एवं गुणवन्तायुक्त उत्पादन करता है। पौधे का स्वास्थ्य प्रकृति के संतुलन के साथ बना रहता है। पौधे का जड़ तन्त्र नाड़ी के समान होता है। (प्राचीन लेखों में नाड़ी का मतलब तन्त्रिका युक्त प्रणाली से है जो मानव शरीर में होता है।) यह पोषक तत्वों को विभिन्न श्रोतों से ग्रहण करता है। यदि नाड़ी का विकास समुचित हुआ है तो पूरे पौधे में पोषक तत्वों का संचार बढता है। जिससे बराबर वृद्विहोती रहती है। जब होमा समुचित तरीके से किया जाता है तो पोषक तत्वों का पूरे पौधे में संवहन द्वारा बराबर मात्रा में संचार होता है। इसी तरह का परिवर्तन मानव शरीर में सूक्ष्म स्तर पर होता है।

फसल उत्पादन

होमा वातावरण में पौधे के आकार में अधिक वृद्धि न होकर उत्पाद की गुणवन्ता एवं मात्रा में वृद्धि होती है। जब अग्निहोत्र किया जाता है तो पौधे की ऊर्जा प्रणाली इस प्रकार व्यवस्थित रहती है कि वातावरण का पोषण पौधे में प्रवाहित होता रहता है जिससे उत्पादन एवं गुणवन्ता में वृद्धि होती है।

जब पौधा के आसपास अग्निहोत्र किया जाता है तब पौधे के चारो तरफ एक वातावरण का निर्माण होता है। इस वातावरण में पोषण होता है जिससे पौधा लगातार पोषण ग्रहण करता है। फलस्वरूप संतुलित वृद्धि एवं अधिक उत्पादन होता है साथ ही साथ पर्यावरण प्रदूषण में कमी भी होती है। बाग में अग्निहोत्र करने पर फलो के आकार में दुगुना वृद्धि होती है इस अध्ययन के लिये संतरा फल उपयुक्त है क्योंकि अग्निहोत्र के प्रभाव का परिणाम इसपर शीघ्र देखा जा सकता है।

टैन्जरिन (नीबू) के पौधों पर अग्निहोत्र का प्रयोग किया जा सकता है। इस तरह के फलों पर अग्निहोत्र का प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है। नाशपाती के फल होमा वातावरण में अधिक स्वादिष्ट एवं मीठे होते हैं।

मृदा

अग्निहोत्र वातावरण में मृदा की जल धारण क्षमता अन्य मृदा की अपेक्षा अधिक होती है। यह धी एवं अन्य लोगो के अनुभवों द्वारा सत्यापित है की जब वर्षा काल में मृदा पोषक तत्वों एवं नमी को अधिक धारण करती है। जिससे पेड़ पौधों का विकास होता है। यह लाभदायक एवं सत्य है। होमा उपचार जैविक कृषि में कुछ भौतिक वस्तुओं की भूमि में प्रतिक्रियायें होती है। जिससे पोषक तत्वों की उपलब्धता में वृद्धि होती है।

घ्झी नमक रहित एवं शुद्ध गाय के मक्खन से तैयार किया जाता है। मक्खन को जब धीमी ऑच पर गर्म किया जाता है तब उसमें मौजूद सभी गन्दगियॉ छानते समय अलग हो जाती हैं। जब वातावरण एवं भूमि में पोषक तत्वेां की कमी होती है तब अग्निहोत्र प्रक्रिया से पौधेां के स्वास्थ्य में वृद्धि की जा सकती है।

अग्निहोत्र वातावरण में पौधें के उपापचय (रस क्रिया) में वृद्धि होती है यह अग्निहोत्र में प्रयुक्त धी के कारण होता है तथा सूक्ष्म स्तर पर मंत्रो के साथ जब धी चावल के साथ अग्निदाह करने से प्रतिक्रिया होती है जिसके फलस्वरूप ऊर्जा संयोजन सौर माला से परिवर्तित होकर भूमि में समाहित होती है। भूमि से यह पोषण तत्वों एवं नमी के साथ पौधे में प्रवेश करती है। पौधा में विटामिन एवं एन्जाइम के उत्पादन में उत्प्रेरक का कार्य करती है। जिससे पादप दैहिकी क्रियाओं में वृद्धि होती है। फलस्वरूप बागों में पौधे के

विकास, उत्पादन तथा गुणवन्ता में वृद्धि होती है। कृषि या वानिकी में मृदा में वायु संचार महत्वपूर्ण है। खेत की तैयारी एवं अंतशस्यीय क्रियाओ के समय जब अग्निहोत्र भस्म का प्रयोग किया जाता है। तब पौधे को समुचित पोषण मिलता है जिससे पौधा स्वस्थ रहता है तथा इसकी पुस्टि पौधों को देख कर की जा सकती है। यदि प्रक्षेत्र या बाग में स्नेह के साथ होमा किया जाय विशेषरूप से अग्निहोत्र, तो स्पन्दन की क्रिया उस क्षेत्र में अधिक होगी जिससे लोग प्रसन्न रहेगें तथा गुणवन्ता युक्त उत्पादन होगा। यदि अग्निहोत्र एवं भस्म का प्रयोग मृदा में किया जाय तो नाइट्रोजन एवं पोटाश की उपलब्ध मात्रा में वृद्धि होती है।

सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता में सार्थक परिवर्तन होता है। क्योंकि सूक्ष्म पोषक तत्वों का पौधों के विकास एवं उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल होमा उपचार से सम्भव है। होमा उपचार से प्रकृति के सभी कारकों में समन्वयन बना रहता है।

जब मृदा पौधों के पोषण में अक्षम होती है। पौधे विभिन्न बीमारियों एवं कीटो से प्रभावित होते हैं फलस्वरूप मरने लगते हैं। इस अवस्था में होमा उपचार से भूमि को पोषित कर पौधों को स्वस्थ किया जा सकता है। होमा से सम्पूर्ण वातावरण प्रभावित होता है। उदाहरणार्थ, केचुए भूमि में सक्रिय हो जाते हैं जिससे भूमि की जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है केचुए स्वस्थ रहते हैं एवं उनके द्वारा हारर्मोन उत्सर्जन में वृद्धि होती है फलस्वरूप मृदा एवं पौधों को लाभ मिलता है।